आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-29, अंक-2

फरवरी 2015

इस अंक में

- शाइज़ोफ्रेनिया : बेहतर सुरक्षा एवं शोध के साथ बढ़ती उम्मीदें 9
- माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा द्वारा राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान, पुणे का दौरा 11
- आई सी एम आर मुख्यालय में दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए पोषण पर पुस्तकों का विमोचन 12
- राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद में दो दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन 13
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 14
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में आई सी एम आर के वैज्ञानिकों की भागीदारी 16
- आई सी एम आर की वित्तीय सहायता से सम्पन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशाला/पाठ्यक्रम/सम्मेलन 17

संपादक मंडल

अध्यक्ष — **डॉ विश्व मोहन कटोच**
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — **डॉ विजय कुमार श्रीवास्तव**

संपादक — **डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय**

प्रकाशक — **श्री जगदीश नारायण माथुर**

शाइज़ोफ्रेनिया : बेहतर सुरक्षा एवं शोध के साथ बढ़ती उम्मीदें

शाइज़ोफ्रेनिया, जिसे विखण्डित मनस्कता कहते हैं, एक मानसिक विकार है जिसमें मानसिक क्रियाशीलता का ह्रास हो जाता है। रोगी में मिथ्या विश्वास अथवा विभ्रम होने, दोहरे विचार आने जैसी स्थितियां पैदा हो जाती हैं। वह सोचता कुछ है और करता कुछ है। वह भावशून्य हो जाता है, किसी कार्य में उसका मन नहीं लगता तथा वह काल्पनिक जगत में पहुंच जाता है।

विश्व में 0.5-1 प्रतिशत लोग शाइज़ोफ्रेनिया से ग्रस्त होते हैं जो मुख्यतया 15 से 30 वर्षीय आयु वर्ग के होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने शाइज़ोफ्रेनिया को उन 10 शीर्ष रोगों की श्रेणी में रखा है जिनका वैश्विक रोग भार में महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। इस विकार की चिकित्सा पर होने वाले व्यय तथा इससे प्रभावित लोगों के बेरोजगार रहने के चलते देश को अत्यधिक आर्थिक क्षति का दंश झेलना पड़ता है। पीड़ित व्यक्ति के परिवार के सदस्यों और उसकी देख-भाल करने वाले व्यक्तियों पर अत्यधिक जिम्मेदारी बढ़ने के साथ-साथ भार भी पड़ता है। इस विकार में दवाइयों तथा उपयुक्त देख-भाल का कोई समान प्रभाव नहीं पड़ता है जबकि इससे पीड़ित लगभग 30 प्रतिशत व्यक्तियों को जीवन भर इलाज की जरूरत पड़ती है। शाइज़ोफ्रेनिया पर बेहतर जानकारी एकत्र करने के उद्देश्य से किए जा रहे ताजा शोध कार्य मुख्यतया इसकी हेतुकी को ज्ञात करने पर केन्द्रित हैं। माता-पिता द्वारा उपयुक्त देख-भाल न किए जाने जैसी मनोवैज्ञानिक स्थितियां तो होती ही हैं, साथ ही अब मस्तिष्क में होने वाले शरीर रचनात्मक (एनाटॉमिकल) और कार्यात्मक परिवर्तनों पर ध्यान केन्द्रित हुआ है। मस्तिष्क में परिवर्तित होने वाली असामान्य आण्विक प्रक्रियाओं को भी सम्मिलित किया गया है।

लगभग 70 प्रतिशत मामलों में वंशागत कारक की भूमिका सहित शाइज़ोफ्रेनिया में आनुवंशिकी अनुसंधान को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानव आनुवंशिकी अनुसंधान का एक हिस्सा मान लिया गया है। अन्य आनुवंशिक विकारों की तरह शाइज़ोफ्रेनिया के लिए जीन मैंपिंग के प्रयासों से मिली जुली सफलता मिली है। *दि जीनोम वाइड एसोसिएशन* के अध्ययनों से अनेक संभावित खतरों के विषय में जानकारी मिली है। जीन मैपिंग अध्ययनों को नवीन औषधियों के विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इसके लिए जिम्मेदार आनुवंशिक खतरे वाले कारकों के अलावा प्रसवपूर्व विकास से लेकर प्रसूति संबंधी जटिलताओं जैसे अनेक परिवेशी कारकों को भी ज्ञात किया गया है। आनुवंशिक अध्ययनों से पता चला है कि माता-पिता की अधिक आयु भी एक संभावित कारक है। दो शिशुओं के जन्म के बीच काफी लम्बा अंतराल और सगर्भता के दौरान माता के फोलेट स्तरों में कमी जैसी स्थितियां अन्य संभावित खतरा हैं। भीड़ वाले शहरी क्षेत्रों में रहने के कारण तनाव, प्रदूषण और उच्च खतरे वाली आदतें जैसी स्थितियां भी संभवतः शाइज़ोफ्रेनिया के खतरे को बढ़ाती हैं।

शिशु के मस्तिष्क का विकास माता के कई विषाणुज संक्रमणों जैसे कि हर्पीज़ सिम्पलेक्स, इंफ्लुएंज़ा, रुबेला आदि से प्रभावित हो सकता है। सगर्भता के दौरान महिला में पोषण संबंधी अल्पताएं भी तंत्रिकाविकास को बाधित कर सकती हैं जिससे शाइज़ोफ्रेनिया के विकसित होने का खतरा बढ़ जाता है। सगर्भता अवधि विशेषतया प्रथम तिमाही के दौरान महिला में तनाव की स्थिति में अपरा (प्लासेंटा) के चारों ओर कॉर्टीसोल की पारगम्यता बढ़ जाती है। विश्व के कई देशों में प्रसूति संबंधी जटिलताओं, जन्म के समय कम भार और बाद के जीवन काल में शाइज़ोफ्रेनिया के निदान के बीच एक संबंध देखा गया है। इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि प्रसव पूर्व देखभाल और प्रसवकालीन निगरानी और उपयुक्त कार्यवाही के परिणामस्वरूप भ्रूणीय मस्तिष्क में होने वाली क्षति कम की जा सकती है।

विगत 10 वर्षों में औषध उद्योग द्वारा कई नवीन मनोविक्षिप्ति रोधी औषधियां प्रस्तुत की गई हैं जिनकी शाइज़ोफ्रेनिया के धनात्मक और ऋणात्मक लक्षणों पर अच्छी प्रभावकारिता होती है। हालांकि, चयापचयज संलक्षण जैसे कुछ इतर प्रभाव देखे जाते हैं।

भारत में स्थिति

भारत में शाइज़ोफ्रेनिया से मिलती-जुलती स्थिति का वर्णन लगभग 3300 वर्षों पूर्व आयुर्वेदिक चिकित्सक चरक ने '*चरक संहिता*' में किया था। हिप्पोक्रेट्स द्वारा ग्रीक मेडिकल पाठ्यपुस्तक में प्रस्तुत वर्णन के साथ इनकी काफी समानता थी। उसके पश्चात भारत द्वारा शाइज़ोफ्रेनिया पर पर्याप्त शोध नहीं किए गए। मद्रास में शाइज़ोफ्रेनिया की प्रक्रिया और उसके परिणाम पर एक महत्वपूर्ण अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में रोगी में शाइज़ोफ्रेनिया के लक्षण की शुरुआत होने के बाद 25 वर्षों तक उसका फॉलो अप किया गया। इस अध्ययन में मृत्यु, नौकरी, विवाह, आदि जैसी स्थितियों से संबंधित काफी सूचनाएं एकत्र की गईं। चेन्नई स्थित शाइज़ोफ्रेनिया शोध फाउण्डेशन द्वारा संपन्न अध्ययन की कनाडा में समान संख्या में रोगियों पर संपन्न अध्ययन से तुलना की गई। दोनों अध्ययनों में इस विकार के विषय में जागरूकता को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इसके परिणामस्वरूप शाइज़ोफ्रेनिया की शुरुआती अवस्था में पहचान की जा सकेगी तथा लम्बी अवधि तक इससे पीड़ित रहने एवं अशक्तता की स्थितियों से बचा जा सकेगा।

सीमित मानव संसाधनों और बजट संबंधी बाधाओं के चलते सामुदायिक स्तर पर उपलब्ध कराई जाने वाली सुरक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारत में सामुदायिक सुरक्षा की धारणा भिन्न नहीं है क्योंकि गंभीर मानसिक रोग ग्रस्त 90 प्रतिशत से अधिक लोग अपने परिवार के साथ रहते हैं। ऐसा नहीं कि परिवार के सदस्य ऐसे रोगियों को सुरक्षा प्रदान करने के इच्छुक होते हैं बल्कि व्यावहारिक रूप से सुरक्षा के कोई विकल्प नहीं हैं। पूरे देश के अस्पतालों में मानसिक रोगियों की देख-भाल एवं चिकित्सा के लिए बिस्तरों की संख्या में भारी कमी है। हालांकि, कुछ गैर सरकारी संगठनों द्वारा समुदाय पर आधारित सुरक्षा और पुनर्वास केन्द्रों का संचालन किया जाता है परन्तु उनकी संख्या बहुत ही कम है। इसके अलावा ऐसे अधिकांश केन्द्र तमिल नाडु ,कर्नाटक और केरल जैसे दक्षिणी राज्यों में हैं। भारत के मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत सर्वप्रथम वर्ष 1980 के दशक में समुदाय पर आधारित पुनर्वास सुविधा की शुरुआत की गई थी। सामुदायिक सुरक्षा नीतियों में समुदाय में मानसिक स्वास्थ्य क्लीनिक्स का संचालन सम्मलित है जो सामान्य आबादी में मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा पर केन्द्रित है।

हाल ही में भारत में संपन्न एक यादृच्छिक कंट्रोल परीक्षण में यह देखा गया कि सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा प्रदान की गई सेवाएं स्वीकार्य हैं और विशेषतया अधिकतम लक्षणों वाले एवं अशक्त रोगियों के लिए प्रभावी हैं। इसके माध्यम से सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा मनोसामाजिक चिकित्सा एवं सुरक्षा सुविधाएं उपलब्ध कराए जाने की संभाव्यता प्रदर्शित हुई है।

मानसिक रोगियों के पुनर्वास में समुदाय के साधारण स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं को रोगियों की स्थिति, अवस्था की पहचान करने में प्रशिक्षित करना एक महत्वपूर्ण नीति है। सामाजिक एवं विकास संबंधी गतिविधियों से जुड़े सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के साथ नेटवर्किंग करके भी पुनर्वास कार्यक्रम को सुगम बनाया गया है। गैर-सरकारी संगठनों द्वारा भी समुदाय - आधारित कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है परन्तु उनकी प्रभावकारिता सीमित वित्तीय सहायता पर निर्भर करती है। हालांकि, गैर-सरकारी संगठनों के सहयोग में संचालित कार्यक्रमों के एक व्यापक भौगोलिक क्षेत्र तक पहुंचने को एक महत्वपूर्ण प्रयास माना जाता है। सामुदायिक सुरक्षा सेवाएं उपलब्ध कराने में कुछ नवीन अंवेषण भी हुए हैं। इनमें से एक है- *शाइज़ोफ्रेनिया रिसर्च फाउण्डेशन* द्वारा *मोबाइल टेली-साइकियाट्री* का प्रयोग करना। मोबाइल उपकरणों से सुसज्जित एक बस द्वारा पुडुकोट्टाई जिले के कुछ क्षेत्रों की आबादी को मानसिक स्वास्थ्य सुरक्षा सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं जिसे स्थानीय आबादी ने व्यापक रूप से अपना लिया है। समुदाय पर आधारित कार्यक्रमों पर अपर्याप्त संसाधनों का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, पेशेवर चिकित्सकों और नीति निर्माताओं दोनों में मानसिक रोगियों की जरूरतों के प्रति असंवेदनशीलता होती है, और आम तौर पर मानसिक स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता होती है। विशेषतया गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित कार्यक्रम मुख्यतया जारी नहीं रह पाते, क्योंकि वे वित्तीय सहायता पर निर्भर निर्धारित अवधि की परियोजनाएं होती हैं।

हमारे देश की प्राथमिकता जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम को अधिक प्रभावी और कुशल बनाना है, समुदाय आधारित अधिक सेवाओं को बढ़ावा देना है तथा बड़े अस्पतालों की निर्भरता घटाना है। शाइज़ोफ्रिनिया ग्रस्त व्यक्ति एवं परिवार के सदस्यों के लिए यह आसान मामला नहीं है। विगत दशक के दौरान कई नई मनोविक्षिप्तिरोधी दवाइयां आ गई हैं, परन्तु अभी भी कुछ रोगी ऐसे हैं जिन पर दवाइयां असर नहीं डालतीं। शाइज़ोफ्रेनिया से व्यक्तियों में तरह-तरह की अशक्तता एवं अक्षमता की स्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं। हालांकि, अन्य वर्ग के अक्षम व्यक्तियों की ही भांति मानसिक रूप से अक्षम व्यक्ति भी कल्याणकारी सुविधाओं के हकदार होते हैं,

यह प्रक्रिया देश के सभी राज्यों में समान रूप से लागू किए जाने की आवश्यकता है।

इस प्रकार, शाइज़ोफ्रेनिया एक गंभीर मानसिक विकार है जिससे मानव की कार्य-प्रक्रिया प्रभावित होती है। शोध कार्यों में प्रगति के परिणामस्वरूप काफी आशाएं बंधी हैं, परन्तु जब-तक कोई अद्‌भुत औषधि प्राप्त नहीं हो जाती, हमें इससे पीड़ित रोगियों और उनके परिवार के सदस्यों के लिए सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं को दूर करने की आवश्यकता है। सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों को चाहिए कि ऐसे व्यक्तियों के लिए सामुदायिक सुविधाओं को बढ़ाने की दिशा में कार्य करें और इस स्थिति के लिए लोगों में जागरूकता उत्पन्न करें, जिससे प्रभावित लोगों का शुरुआती अवस्था में इलाज हो सके और वे समाज का हिस्सा बन सकें।

यह आलेख आई सी एम आर द्वारा प्राकशित *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* के अक्टूबर, 2014 अंक में आइ-तारा, शाइज़ोफ्रेनिया रिसर्च फाउण्डेशन, चेन्नई द्वारा प्रकाशित सम्पादकीय पर आधारित है।

माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा द्वारा राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान, पुणे का दौरा

माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने दिनांक 14 फरवरी, 2015 को आई सी एम आर के पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान का दौरा किया। संस्थान के निदेशक डॉ डी.टी. मौर्य ने माननीय मंत्री महोदय का स्वागत करते हुए उन्हें बायोसेफ्टी लेवेल-4 प्रयोगशाला (BSL-4) ले गए।

निदेशक डॉ डी. टी. मौर्य माननीय मंत्री महोदय को संस्थान की गतिविधियों से अवगत कराते हुए

डॉ मौर्य ने उन्हें संस्थान के दूरदर्शी उद्‌देश्य और अधिदेश के विषय में अवगत कराया। उन्होंने यह भी बताया कि यह संस्थान जलजन्य रोगों, पशुजन्य रोगों, अर्बोविषाणु रोगों, विगत 64 उभरते एवं पुनः उभरते अत्यंत संक्रामक रोगों पर कार्य करते हुए किस प्रकार मानव स्वास्थ्य के हित में कार्यरत है। माननीय मंत्री महोदय को यह भी अवगत कराया कि आई सी एम आर का यह अत्यन्त महत्वपूर्ण संस्थान इबोला, क्रीमियन कांगो रक्तस्रावी ज्वर, निपाह MERS- कोरोना विषाणु, विश्वमारी एवं एवियन इंफ्लुएंज़ा तथा कई अन्य विषाणुज रोगों की स्थिति में उत्पन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय आपातकाल में अनिवार्य सहायता प्रदान करता है। डॉ मौर्य ने अवगत कराया कि राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान में इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी, जन्तुगृह, बायोइंफॉर्मेटिक्स, BSL-3 और BSL-4 प्रयोगशालाएं विषाणुज नैदानिक प्रयोगशाला (VDL) एपेक्स नेटवर्क प्रयोगशाला इंफ्लुएंज़ा एवं एवियन सहयोगी केन्द्र, मीज़ल्स एवं रोटा सर्विलैंस केन्द्र जैसी मूलभूत सुविधाएं मौजूद हैं। राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान की गोरखपुर, केरल और बैंगलोर स्थित तीन इकाइयां कार्यरत हैं। बैंगलोर इकाई में एक पोलियो निगरानी केन्द्र है। इस संस्थान द्वारा जापानी मस्तिष्कशोथ, वेस्ट नाइल, डेंगी और चिकनगुनया विषाणुज रोगों के निदान हेतु देश में नैदानिक किट्स प्रदान किए जाते हैं।

बाएं से डॉ डी. टी. मौर्य एवं माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा

हाल ही में इस संस्थान द्वारा जनस्वास्थ्य के हित में कई महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियां विकसित की गई हैं। देश में विकसित प्रथम स्वदेशी वैक्सीन के रूप में जापानी मस्तिष्कशोथ के विरुद्ध एक वैक्सीन लांच की गई।

माननीय मंत्री महोदय ने BSL-4 प्रयोगशाला का दौरा किया और क्रीमियन कांगो रक्तस्रावी ज्वर (CCHF),क्यासानूर फॉरेस्ट डिसीज़ (KFD) निपाह और इबोला जैसे अत्यंत संभावित खतरे वाले विषाणुओं पर देश में जन स्वास्थ्य के लिए कार्यरत स्टाफ के कठिन परिश्रम और समर्पण पर अत्यंत रुचि प्रदर्शित की । उन्होंने इस प्रयोगशाला से संबद्ध वैज्ञानिकों और अधिकारियों से विचार-विमर्श भी किया। अंत में आदरणीय मंत्री महोदय ने राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के दौरे को एक अत्यंत महत्वपूर्ण बताया तथा संस्थान के वैज्ञानिक तकनीकी, प्रशासनिक स्टाफ के कठिन परिश्रम एवं समर्पण से अत्यंत प्रभावित हुए। अंत में संस्थान के निदेशक डॉ मौर्य ने माननीय मंत्री महोदय के इस महत्वपूर्ण दौरे के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

माननीय मंत्री महोदय के साथ सामूहिक चित्र

आई सी एम आर मुख्यालय में दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए पोषण पर पुस्तकों का विमोचन

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव, एवं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच के कर कमलों द्वारा दिनांक 18 फरवरी, 2015 को आई सी एम आर मुख्यालय में दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए ब्रेल लिपि में पोषण पर तीन लोकप्रिय पुस्तकों का विमोचन किया। आई सी एम आर के हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा प्रकाशित ये पुस्तकें *'डाइटरी गाइडलाइंस फॉर इंडियंस'*; *'डाइट ऐण्ड डायबिटीज़'*; और *'डाइट ऐण्ड हार्ट डिसीज़'* जनसामान्य के लिए पोषण पर महत्वपूर्ण जानकारी से परिपूर्ण हैं। अब ये पुस्तकें ब्रेल लिपि में दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए विशेष तौर पर तैयार की गई हैं। ये पुस्तकें हैदराबाद स्थित दवनार फाउण्डेशन के संस्थापक और प्रतिष्ठित नेत्ररोगविज्ञानी पद्मश्री डॉ ए. साइबाबा गौड के सहयोग से तैयार की गई हैं, इस अवसर पर डॉ गौड उपस्थित थे। इस अवसर पर राष्ट्रीय पोषण संस्थान की प्रभारी-निदेशक डॉ के. पोलासा भी उपस्थित थीं। इन पुस्तकों के विमोचन के अवसर पर डॉ कटोच ने अपने सम्बोधन में कहा कि भिन्न तौर पर पूर्णतया सक्षम व्यक्तियों के लिए इन पुस्तकों का प्रकाशन आई सी एम आर के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने इनके प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों को बधाई दी।

दृष्टिबाधित छात्रों के साथ डॉ वी. एम. कटोच एवं अन्य अतिथिगण

संबोधित करते हुए डॉ. वी.के. श्रीवास्तव

संबोधित करते हुए डॉ. के. पोलासा

जन सामान्य के लिए हिन्दी में दो पुस्तकों का विमोचन

राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा 'डाइट ऐण्ड हार्ट डिसीज़' तथा 'डाइटरी गाइडलाइंस फॉर इंडियंस-अ मैनुअल' शीर्षक से प्रकाशित पुस्तकों का हिन्दी रूपांतरण क्रमशः *'आहार एवं हृदय रोग'* तथा *'भारतीयों के लिए आहारीय संदर्शिका-एक नियमावली'* शार्षक से प्रकाशित किया गया है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय के प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग द्वारा प्रकाशित ये पुस्तकें जनस्वास्थ्य को हिन्दी माध्यम में पोषण संबंधी जानकारी देने का एक प्रयास है। इस अवसर पर डॉ कटोच महोदय ने इन दोनों पुस्तकों का भी विमोचन किया। इस कार्यक्रम में वैज्ञानिक 'जी' एवं मानव संसाधन विकास प्रभाग के प्रमुख डॉ के. के. सिंह; वैज्ञानिक 'जी' तथा प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के प्रमुख डॉ वी. के. श्रीवास्तव के साथ बड़ी संख्या में वैज्ञानिकगण, अधिकारीगण उपस्थित थे। विभिन्न संस्थानों में अध्ययन दृष्टिबाधित छात्र-छात्राओं की विशेष उपस्थिति थी।

डॉ वी. एम. कटोच द्वारा पुस्तकों का विमोचन, साथ में अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति

राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद में दो दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

आई सी एम आर के अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान द्वारा 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण एवं व्यावसायिक स्वास्थ्य' विषय पर दिनांक 20-21 फरवरी, 2015 के दौरान एक दो - दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी के उद्‌घाटन समारोह की शुरुआत प्रातः 10:30 बजे राष्ट्रीय गान के साथ शुरू हुई। मुख्य अतिथि आदरणीय श्री ओ. पी. कोहली, राज्यपालश्री, गुजरात राज्य का मुख्य द्वार पर अगवानी करने के लिए श्री टी.एस. जवाहर, आई ए एस, वरिष्ठ उपमहानिदेशक (प्रशासन) व मुख्य सतर्कता अधिकारी, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद; प्रो. वाई. के. गुप्ता, अध्यक्ष, भेषजगुणविज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली व संस्थान की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के अध्यक्ष, डॉ डी. के. शुक्ला, प्रमुख, असंचारी रोग प्रभाग, आई सी एम आर तथा डॉ सुनील कुमार, प्रभारी निदेशक व वैज्ञानिक 'जी', राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान उपस्थित रहे।

उद्‌घाटन समारोह की शुरुआत सरस्वती वंदना से की गई, तत्पश्चात संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ सुनील कुमार ने डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर तथा संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी की ओर से अतिथियों का स्वागत किया। तत्पश्चात उन्होंने संस्थान की पचास वर्षों की गतिविधियों पर प्रकाश डाला और अपने वक्तव्य में स्वर्ण जयंती के अवसर पर वर्ष में प्रस्तावित संगोष्ठी, प्रशिक्षण कार्यकम, परिचर्चा, कार्यशाला व जागरूकता कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। डॉ सुनील कुमार ने संस्थान द्वारा राष्ट्र के अनेक भागो में स्वास्थ्य व पर्यावरण पर संपन्न अनुसंधान व सुरक्षा के कार्यक्रम से श्रमिकों को पहुंचने वाले लाभ के विषय में जानकारी प्रदान की।

डॉ. डी. के. शुक्ला ने आईसीएमआर द्वारा इस संस्थान को समुचित निर्देशन व मार्गदर्शन प्रदान करने का आश्वासन दिया।

प्रो. वाई. के. गुप्ता ने स्वर्ण जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिंदी संगोष्ठी का आयोजन करना संस्थान द्वारा एक महत्वपूर्ण एवं आम जन के लिए उपयोगी कदम बताया और कहा कि इससे व्यवसायों में लगे श्रमिकों के लिए अनुसंधान को आम भाषा में बातों को समझाने में बल मिलता है। प्रो. गुप्ता ने संस्थान की वैज्ञानिक गतिविधियों की सराहना की।

श्री टी. एस. जवाहर, आई ए एस ने अपने वक्तव्य में बताया कि इस संस्थान ने पचास सालों में अनुसंधान संबंधी अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं, साथ ही व्यावसायिक अनुसंधान पर गहन अध्ययन किए जा रहे हैं। श्री जवाहर ने माननीय प्रधान मंत्री जी के स्वच्छ भारत अभियान से जुड़ने की मुहीम को साथ में जोड़ा और कहा कि हर पटल को स्वच्छ रखकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकती है। ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से हम श्रमिकों की सुरक्षा व उद्योगों को प्रदूषण मुक्त करने की दिशा में प्रयत्नशील हैं और राष्ट्र के विकास में शामिल हो पाते हैं।

सम्माननीय श्री ओ. पी. कोहली, राज्यपालश्री, गुजरात राज्य ने दीप प्रज्वलित करके समारोह की शुभ शुरुआत की, और अपने संबोधन में बताया कि मनुष्य जन्म से तीन ऋणों को लेकर आता है और उनके उद्देश्यों को अपने जीवन में पूरा करके, निर्वहन करके तीनों ऋणों से मुक्त होता है, जैसे पितृ ऋण जो हम अपने पूर्वजों के आदर्शों पर चलकर, निभाकर पूरा कर सकते हैं, दूसरा ऋण ऋषि ऋण को बताया जो हमारे पुरातन ज्ञानी व वैज्ञानिक रहे जिन्होंने अगली पीढ़ी के लिए बहुत कुछ उन्नत मार्ग प्रशस्त किया, जिस पर चलकर हम आज नयी ऊँचाइयों को प्राप्त कर रहे हैं और प्रेरित हो रहें हैं कि हम भी कुछ वैसा ही करके उस ऋण से मुक्त हो सकें। तीसरा ऋण देव ऋण बताया और कहा की हमारे देव सूर्य, वायु और पृथ्वी हैं जिन्होंने हमें सब कुछ प्रदान किया है और खुद कुछ भी संगृहीत नहीं करते। अब हमारी जवाबदेही है कि हम स्वास्थ्य, सुरक्षा व पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त कर तथा जीवन के हर उस पटल को समृद्ध करके ऋण से मुक्त हो सकते हैं। इससे हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए एक सुखमय मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। महामहिम राज्यपाल महोदय ने बताया कि यह संस्थान अपने वैज्ञानिकों और कर्मचारियों की मदद से अनुसंधान व जागरूकता का काम बखूबी कर रहा है।

अंत में संस्थान के वैज्ञानिक डॉ एस. एस. ए. जैदी ने आमंत्रित मुख्य अतिथि व देश के अनेक क्षेत्रों से पधारे हुए वक्ताओं, मीडिया मित्रों, संस्थान के अधिकारी व कर्मचारीगण तथा हर उन लोगों का आभार प्रकट किया जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से इस संगोष्ठी में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया है।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) के विभिन्न तकनीकी दलों/समितियों की नई दिल्ली में संपन्न बैठकें:

स्टेम सेल अनुसंधान और चिकित्सा के लिए शीर्ष समिति की 12वीं बैठक	21 जनवरी, 2015
नैनोमेडिसिन और नैनोफार्मास्युटिकल्स पर विशेषज्ञ दल की बैठक	21 जनवरी, 2015
क्षयरोग निदान की वैधता पर परियोजना से संबंधित पहलुओं और प्रगति पर चर्चा करने हेतु अंवेषणकर्ताओं की बैठक	21 जनवरी, 2015
भोपाल स्मारक अस्पताल एवं अनुसंधान केन्द्र की संस्थाओं के साथ बैठक	22 जनवरी, 2015
वित्तीय संचालन समिति की बैठक	27 जनवरी, 2015
भूजल में उच्च मात्रा में उपस्थित आर्सेनिक के दुष्प्रभावों से निपटने हेतु टास्क फोर्स पर बैठक	28 जनवरी, 2015
बायोमेडिकल अनुसंधान बोर्ड की बैठक	28 जनवरी, 2015
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की मॉडेल शोध इकाई और मानव संसाधन विकास योजनाओं के लिए प्रस्तावों पर अंतिम निर्णय लेने हेतु अनुमोदन समिति की बैठक	29 जनवरी, 2015
तदर्थ और नैदानिक किट विकास हेतु मधुमेह परियोजना पुनरीक्षण दल की बैठक	29 जनवरी, 2015
"हवन" की कोर समिति की बैठक	29 जनवरी, 2015
कुष्ठरोग में औषध प्रतिरोध की बैठक	2 फरवरी, 2015
नैनोमेडिसिन पर फेलोशिप विशेषज्ञ दल की बैठक	2 फरवरी, 2015
हैण्ड्स ऑन दक्षता प्रशिक्षण और पास्परिक चर्चा सहित वास्तविक प्रशिक्षण द्वारा तंत्रिका शल्यक्रिया दक्षता के विकास के मूल्यांकन पर टास्क फोर्स दल की बैठक	3 फरवरी, 2015
सोयाबीन पर आई सी एम आर - आई सी ए आर संयुक्त समिति की 5वीं बैठक	3 फरवरी, 2015
एच आई वी/ एड्स एवं माइक्रोबीसाइड्स पर आई सी एम आर - डी बी टी विशेषज्ञ दल की बैठक	3 फरवरी, 2015
डिम्बक्षरण की क्षति के बिना सगर्भता के निवारण हेतु विशिष्ट रीकॉम्बीनैंट β- hcG-LTB वैक्सीन के विकास पर विशेषज्ञ समिति की बैठक	3 फरवरी, 2015
जीन चिकित्सा पर विशेषज्ञ दल की बैठक तथा आई सी एम आर - डी बी टी संयुक्त कार्यशाला	4 फरवरी, 2015
औषधीय पादप प्रभाग के वैज्ञानिक सलाहकार दल की 11वीं बैठक	4 फरवरी, 2015
स्टेम सेल अनुसंधान और चिकित्सा पर विशेषज्ञ दल की बैठक	5 फरवरी, 2015
मानव कोरियॉनिक गोनैडोट्रॉपिन (hcG) के विरुद्ध पुनर्जीवित रीकॉम्बीनैंट वैक्सीन पर प्रथम प्रावस्था के चिकित्सीय परीक्षणों पर विशेषज्ञ समिति की बैठक	6 फरवरी, 2015
एन डी आर आर एन के तकनीकी विशेषज्ञ दल की बैठक	9 फरवरी, 2015
हिमाचल प्रदेश में राष्ट्रीय जनजातीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की फील्ड इकाई स्थापित करने के लिए विधियों पर चर्चा करने हेतु विशेषज्ञ दल समिति की बैठक	10 फरवरी, 2015
अतिरक्तदाब पर टास्क फोर्स की बैठक (प्रथम एवं द्वितीय प्रावस्था)	10 फरवरी, 2015
छत्तीसगढ़ में क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र की स्थापना हेतु सलाहकार समिति की बैठक	10 फरवरी, 2015
अर्बुदविज्ञान के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	10-12 फरवरी, 2015

प्रासंगिक जन्तु मॉडेल में हर्बल उत्पाद की प्रभावकारिता के मूल्यांकन द्वारा लोकसाहित्य में उपस्थित चिकित्सा पद्धति के प्रयोगकर्ता एक पारम्परिक चिकित्सक के दावों की वैधता स्थापित करने हेतु बैठक	10 फरवरी, 2015
विभिन्न संबंधित लॉजिस्टिक पहलुओं के लिए फर्म से चर्चा करने हेतु आई सी एम आर विशेषज्ञ समिति की बैठक	10 फरवरी, 2015
जठरांत्ररोगविज्ञान के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	11 फरवरी, 2015
वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति पर विचार करने हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	11 फरवरी, 2015
तंत्रिकाविज्ञान की परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	12 फरवरी, 2015
भारत में युवा आयु में शुरुआत सहित मधुमेह ग्रस्त लोगों के पंजीकरण पर टास्क फोर्स परियोजना हेतु विचारोत्तेजक सत्र पर विशेषज्ञ दल की बैठक	13 फरवरी, 2015
स्वास्थ्य प्रणाली अनुसंधान की बैठक	13 फरवरी, 2015
जराविद्या के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	16 फरवरी, 2015
पर्यावरण पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	16 फरवरी, 2015
मॉडेल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान इकाइयों (MRHRUs) की प्रगति की समीक्षा हेतु बैठक	17 फरवरी, 2015
भारत में मौसमी इंफ्लुएंज़ा, CCHF और क्यासानूर फॉरेस्ट डिज़ीज़ की स्थिति की समीक्षा करने हेतु बैठक	17 फरवरी, 2015
कॉक्रेन के प्रयोग की प्रगति पर चर्चा करने हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	17 फरवरी, 2015
आई सी एम आर के संस्थानों / केन्द्रों में वैज्ञानिक उपकरणों के क्रय हेतु आई सी एम आर तकनीकी समिति की बैठक	18 फरवरी, 2015
मेडिकल कॉलेजों में स्थित बहु विषयक शोध इकाइयों (MRUs) और विषाणुविज्ञान नैदानिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं की प्रगति की समीक्षा करने हेतु द्वितीय पुनरीक्षण बैठक	18 फरवरी, 2015
ट्रांसलेशनल अनुसंधान तंत्रिकाविज्ञान टास्क फोर्स बैठक	19 फरवरी, 2015
माइक्रोबियलरोधी प्रतिरोध पर बैठक	19 फरवरी, 2015
वर्तमान NRSN गतिविधियों पर चर्चा करने हेतु बैठक	20 फरवरी, 2015
राष्ट्रीय स्टेम सेल अनुसंधान एवं चिकित्सा शीर्ष समिति की 10वीं उपसमिति की बैठक	20 फरवरी, 2015
NDRRN के तकनीकी विशेषज्ञ दल की बैठक	23 फरवरी, 2015
मानसिक स्वास्थ्य पर उन्नत अनुसंधान केन्द्र हेतु बैठक	23 फरवरी, 2015
विषाणुज नैदानिक एवं अनुसंधान प्रयोगशाला (VDRL) की अनुमोदन समिति की बैठक	23 फरवरी, 2015
लघुकालिक स्टूडेंटशिप के विशेषज्ञ दल की बैठक	23-27 फरवरी, 2015
उत्कृष्ट बहुविषयक केन्द्र (MCOE) मौलिक आयुर्विज्ञान की बैठक	24 फरवरी, 2015
जैवसूचनाविज्ञान केन्द्र के अंतर्गत वैज्ञानिक 'सी' और 'बी' के लिए चयन समिति की बैठक	24 फरवरी, 2015
कार्यकारी परिषद की बैठक	25 फरवरी, 2015
व्यापारिक उद्देश्य से मानव जैविक सामग्री के हस्तांतरण के लिए आवेदन के मूल्यांकन हेतु विशेषज्ञ समिति की बैठक	25 फरवरी, 2015
भोपाल स्थित राष्ट्रीय पर्यावरणीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान की स्थापना नामक परियोजना हेतु संचालन वित्तीय समिति की बैठक	25 फरवरी, 2015

महिलाओं के स्वास्थ्य पर परियोजना पुनरीक्षण समूह की बैठक	25 फरवरी, 2015
जैवआयुर्विज्ञान में उत्कृष्ट अनुसंधान हेतु डॉ बी. आर. अम्बेडकर शताब्दी पुरस्कार - 2011 तथा डॉ सुभाष मुखर्जी पुरस्कार - 2012 हेतु चयन समिति की बैठक	25 फरवरी, 2015
बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार तथा शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार 2011 एवं 2012 के लिए चयन समिति की बैठक	25 फरवरी, 2015

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में आई सी एम आर के वैज्ञानिकों की भागीदारी

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ अश्विनी कुमार ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में WHO के अंतर्गत रोगवाहक नियंत्रण के तृतीय सलाहकार दल (VCAG) की बैठक में भाग लिया (12-14 नवम्बर, 2014)।

मुम्बई स्थित राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'सी' डॉ रागिनी कुलकर्णी ने फिलीपींस में संपन्न एशिया और पश्चिमी पैसिफिक में एथिकल समीक्षा समिति मंच के 14वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया (23-26 नवम्बर, 2014)।

अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान के वैज्ञानिक 'सी' श्री ए.बी. पटेल ने कार्डिफ, यू के में संपन्न IPCS INTOX डाटा प्रबंधन प्रणाली के प्रयोगकर्ताओं की 8वीं बैठक में भाग लिया (24-26 नवम्बर, 2014)।

चेन्नई स्थित राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'सी' डॉ बीना थॉमस ने स्टॉकहोम, स्वीडन में संपन्न क्षयरोग समाप्ति हेतु अनुसंधान पर विश्व स्वास्थ्य संगठन की परामर्शक बैठक में भाग लिया (24-25 नवम्बर, 2014)।

चेन्नई स्थित राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'बी' डॉ राजकुमार प्रभु ने फिलीपीन्स में सम्पन्न एशिया और पश्चिमी पैसिफिक में एथिकल समीक्षा समिति मंच के 14वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया (23-26 नवम्बर, 2014)।

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ ए. एल. खण्डारे ने थाईलैण्ड में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय फलोराइड अनुसंधान संस्था के 32वें सम्मेलन में भाग लिया। (25-29 नवम्बर, 2014)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान केन्द्र के निदेशक डॉ डी.टी. मौर्य ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में सम्पन्न जैविक हाथियार सभा (BWC) की बैठक में भाग लिया (1-5 दिसम्बर, 2014)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय विकृतिविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ पूनम सलोत्रा ने इस्तनबुल, टर्की में सम्पन्न "PKDL कंशोर्शियम बैठक" में भाग लिया (2-3 दिसम्बर, 2014)।

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' श्री टी. लोंगवा ने कोलम्बो, श्रीलंका में "संपन्न जैवविविधता, आहार और पोषण पर संगोष्ठी में भाग लिया (8 दिसम्बर, 2014)।

जबलपुर स्थित आर एम आर सी टी की निदेशक डॉ नीरू सिंह ने नई दिल्ली में सम्पन्न दक्षिण एशिया में आर्टीमिसिनिन के प्रति प्रतिरोध की समस्या दूर करने हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन - SE ARO की एक अंतर्देशीय बैठक में भाग लिया (9-11 दिसम्बर, 2014)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ एम. एस. चड्ढा ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में "सम्पन्न विश्वमारी इंफ्लुएंजा गंभीरता मूल्यांकन (PISA)" पर द्वितीय (WHO) विशेषज्ञ कार्यकारी दल की बैठक में भाग लिया (24-26 दिसम्बर, 2014)।

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'सी' डॉ के. भास्करचारी ने मैनचैस्टर, यू के में सम्पन्न 21वी शताब्दी में प्रोटीन समस्या से निपटने हेतु प्रोटीन पोषण और नवीन प्रोटीन संघटकों पर सम्पन्न बैठक में भाग लिया (19-22 जनवरी, 2014)।

कोलकाता स्थित राष्ट्रीय हैज़ा और आंत्ररोग संस्थान की वैज्ञानिक 'डी' डॉ ममता चावला ने ताइपी, ताइवान में संपन्न पैसिफिक रिम में उभरते संक्रामक रोगों पर 17वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया (25-29 जनवरी, 2015)।

राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' श्री टी. लोंगवा ने रोम, इटली में संपन्न कृषि जैवविविधता के लिए स्वदेशी सहभागिता पर विशेषज्ञ दल की बैठक में भाग लिया (9-10 फरवरी, 2015)।

पटना स्थित राजेन्द्र स्मारक आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ प्रदीप दास ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में सम्पन्न विश्व स्वास्थ्य संगठन की कालाज़ार विलोपन कार्यक्रम के सहभागियों की बैठक में भाग लिया (10-11 फरवरी, 2015)।

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ के. माधवन नायर ने सिंगापुर में सम्पन्न परिवर्तन हेतु तृतीय सतत प्रमाण-आधारित कार्यवाही (च्क्ष्ए परिवर्तन) पर सेमिनार कार्यशाला में भाग लिया (11-12 फरवरी, 2015)।

राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ अनुपकुमार अन्विकर ने सिएम रीप, कम्बोडिया में संपन्न 13वीं MMV स्टेकहोल्डर्स की बैठक में भाग लिया (24-26 फरवरी, 2015)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की निदेशक डॉ नीना वलेचा तथा वैज्ञानिक 'ई' डॉ अनुपकुमार अन्विकर ने बैंकॉक, थाइलैण्ड में सम्पन्न आर्टीमिसिनिन सहयोग के प्रति प्रतिरोध पता लगाने की तैयारी पर बैठक में भाग लिया (27 फरवरी, 2015)।

आई सी एम आर की वित्तीय सहायता से सम्पन्न एवं भावी संगोष्ठियां/ सेमिनार/कार्यशाला/पाठ्यक्रम/सम्मेलन

विषय	दिनांक एवं समय	सम्पर्क के लिए पता
स्वास्थ्य और रोग में जीनोमिक्स पर संगोष्ठी तथा भारतीय मानव आनुवंशिकी संस्था का 40वां वार्षिक सम्मेलन	28 जनवरी-2 फरवरी, 2015 मुम्बई	**डॉ वी. बाबूराव** वैज्ञानिक 'डी' राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान मुम्बई
12वीं कृषिविज्ञान कांग्रेस	3-5 फरवरी, 2015 करनाल	**डॉ एम. एस. चौहान** प्रधान वैज्ञानिक जन्तु जैवप्रौद्योगिकी विभाग राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल
जैविकी में बायोएथिक्स पर नवीन दिशाओं पर सेमिनार	5-6 फरवरी, 2015 कड्डालोर	**डॉ एम. अंथाराज** सहायक आचार्य वनस्पति विज्ञान विभाग पेरीया आर्ट कॉलेज कड्डालोर (तमिल नाडु)
पब्लिक हेल्थ एवीडेंस साउथ एशिया (PHESA) पर संगोष्ठी	5-6 फरवरी, 2015 मनीपाल	**डॉ एम. श्री कुमारन नायर** आचार्य एवं विभागाध्यक्ष सांख्यिकी विभाग मनीपाल विश्वविद्यालय मनीपाल
बायोमैटीरियल्स, ऊतक इंजीनियरिंग, औषध वितरण प्रणाली तथा रीजेनेरेटिव मेडिसिन पर इण्डो-आस्ट्रेलियन सम्मेलन	5-7 फरवरी, 2015 चेन्नई	**डॉ एन. नजेन्द्रन** आचार्य रसायनविज्ञान विभाग अन्ना विश्वविद्यालय चेन्नई
देहली स्टेट चैप्टर ऑफ सोसाइटी ऑफ एण्डोस्कोपिक ऐण्ड लैप्रोस्कोपिक सर्जंस ऑफ इंडिया (DSC-SELSI) का द्विवार्षिक सम्मेलन -ENDOLAP-2014	6-8 फरवरी, 2015 नई दिल्ली	**डॉ पवनीन्द्रलाल** आचार्य शल्यचिकित्सा विभाग मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज एवं संबद्ध अस्पताल नई दिल्ली
UP - माइक्रोकॉन - 2015 AMM-UP चैप्टर का 11वां वार्षिक सम्मेलन	6-8 फरवरी, 2015 वाराणसी	**डॉ प्रद्योत प्रकाश** आयोजन सचिव सूक्ष्मजीवविज्ञान विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
मौलिक मेकैनिकल वेंटीलेशन पर कार्यशाला	7 फरवरी, 2015 भोपाल	**डॉ सुभाष सहगल** सहायक आचार्य ट्रामा एवं आपातकालीन विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली

शोध के लिए आण्विक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा पर कार्यशाला	7-9 फरवरी, 2015 वाराणसी	**डॉ राजा वशिष्ठ त्रिपाठी** आयोजन सचिव मॉलीकुलर बायोलॉजी यूनिट बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
चण्डीगढ़ के मेडिकल एवं पैरामेडिकल अस्पताल की महिला कर्मचारियों और छात्राओं के पूर्वाभिमुखीकरण प्रशिक्षण पर सेमिनार	11 फरवरी, 2015 चण्डीगढ़	**डॉ अमरजीत सिंह** आचार्य सामुदायिक चिकित्साविज्ञान विभाग स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़
बाल वाणी विकार : आकलन और चिकित्सा प्रबंध पर कार्यशाला	12-13 फरवरी, 2015 मैसूर	**डॉ जयकुमार टी.** व्याख्याता वाणी भाषाविज्ञान विभाग अखिल भारतीय वाणी एवं श्रवण संस्थान मैसूर
कर्ण एवं श्रवण सुरक्षा : बेहतर श्रवण हेतु कार्यवाही पर प्रथम विश्व कांग्रेस	12-14 फरवरी, 2015 नई दिल्ली	**डॉ ए.के. अग्रवाल** आचार्य ई एन टी विभाग मौलाना आज़ाद डेंटल कॉलेज एवं अस्पताल नई दिल्ली
फार्मास्युटिकल उद्योगों में विज्ञान एवं अनुसंधान में आण्विक तकनीकों के प्रयोग पर कार्यशाला	12-14 फरवरी, 2015 ऊटी	**डॉ ए. आर. श्रीविद्या** सहायक आचार्य फार्मेसी एवं बायोटेक्नोलॉजी विभाग जे. एस. एस. कॉलेज ऑफ फार्मेसी ऊटी
साउथ एशियन बायोटेक्नोलॉजिस्ट सम्मेलन-2015	12-14 फरवरी, 2015 नई दिल्ली	**डॉ रितु गौड़** सहायक आचार्य लाइफ साइंस संकाय साउथ एशियन विश्वविद्यालय नई दिल्ली
PEDIGEN 2015 : द्वितीय राष्ट्रीय बाल आनुवंशिकी सम्मेलन	13-15 फरवरी, 2015 पुणे	**डॉ कौमुदी गोडबोले** परामर्शक क्लीनिकल जेनेटिक्स दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल एवं अनुसंधान केन्द्र पुणे
भारत में फार्मेकोविजिलेंस : संभावनाएं पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	14-15 फरवरी, 2015 इटावा	**डॉ यू. एस. शर्मा** आचार्य एवं निदेशक सर मदनलाल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी इटावा

जैवभौतिकी संस्था पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	14-17 फरवरी, 2015 नई दिल्ली	**प्रो ज़ुबेदा अंसारी** अध्यक्ष जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली
TROPMET 2015 : मौसम एवं जलवायु की गंभीर स्थितियों पर संगोष्ठी	15-18 फरवरी, 2015 नई दिल्ली	**डॉ के. जे. रमेश** आयोजन सचिव इंडिया मेट्रोलॉजी डिपार्टमेंट मौसम भवन कॉम्पलेक्स नई दिल्ली
औषध चयापचय, फार्मेकोकाइनेटिक्स: औषध खोज और विकास की दिशा में प्रयोग पर 7वीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	18-23 फरवरी, 2015 मोहाली	**डॉ अभय टी. संगमवार** सहायक आचार्य फार्मास्युटिक्स विभाग राष्ट्रीय फार्मास्युटिक्स शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान मोहाली
रेडियोबायोलॉजी, स्टेम कोशिकाओं और कैंसर अनुसंधान में ताजा प्रगति पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	19-21 फरवरी, 2015 नई दिल्ली	**प्रो राना पी. सिंह** आचार्य जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली
प्राकृतिक उत्पादों के रसायनविज्ञान और उनकी प्रभावकारिता पर सेमिनार	20-21 फरवरी, 2015 तंज़ावूर	**श्रीमती ए. अमरगीता** सहायक आचार्य रसायनविज्ञान विभाग बोन सेकर्स कॉलेज फॉर वीमेन तंज़ावूर
औषध खोज एवं विकास हेतु फार्मास्युटिकल विज्ञान में नवीन प्रगति पर 7वीं NIPER (RBI) - CSIR-CDRI संगोष्ठी	20-21 फरवरी, 2015 नागपुर	**डॉ प्रकाश इतानकर** सहायक आचार्य फार्मास्युटिकल विज्ञान विभाग महात्मा ज्योति बा फुले विश्वविद्यालय नागपुर
चिकित्सा भौतिकी, विकिरण सुरक्षा और रेडियोबायोलॉजी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	20-22 फरवरी, 2015 जयपुर	**श्री मुकेश जैन** आचार्य एवं विभागाध्यक्ष रेडियोलाजिकल भौतिकी विभाग सवाई मान सिंह मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल जयपुर
नेशनल एकेडमी ऑफ बर्न्स का 23वां वार्षिक सम्मेलन	20-22 फरवरी, 2015 तंज़ावूर	**डॉ जे. एस. कोहली** आयोजन सचिव भारतीदासन यूनिवर्सिटी तंज़ावूर
सांख्यिकीय इंटरेंस सैम्पलिंग तकनीकें एवं संबद्ध विषयों पर 5वां राष्ट्रीय सम्मेलन	21-22 फरवरी, 2015 अलीगढ़	**प्रो काजी हज़हर अली** अध्यक्ष सांख्यिकी विभाग अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़

प्राथमिक प्रतिरक्षा अल्पता रोगों पर तृतीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	21-23 फरवरी, 2015 चेन्नई	**डॉ मीनाक्षी कृष्णन** परामर्शक प्रत्यूर्जता विभाग अपोलो बाल अस्पताल चेन्नई
औषध विकास और उपेक्षित उष्णकटिबंधीय संक्रमण रोगों पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला	22-27 फरवरी, 2015 चेन्नई	**प्रो डी. वेलमुरुगन** निदेशक मद्रास विश्वविद्यालय चेन्नई
जीनोमिक्स युग में परजीवीविज्ञान : अवसर एवं चुनौतियों पर IAAVP की 25वीं राष्ट्रीय कांग्रेस	23-25 फरवरी, 2015 बरेली	**डॉ पी. एस. बनर्जी** विभागाध्यक्ष परजीवीरोगविज्ञान विभाग भारतीय वेटेरनेरी अनुसंधान संस्थान बरेली
रसायन जैविकी औषध डिज़ाइन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (ICBDD-2015)	24-25 फरवरी, 2015 लखनऊ	**प्रो देव दत्त चतुर्वेदी** आयोजक लेबोरेट्री ऑफ मेडिकल केमिस्ट्री एमिटी यूनिवर्सिटी लखनऊ
प्रजनन जैविकी और तुलनात्मक अंतःस्रावीविज्ञान पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	25-27 फरवरी, 2015 वाराणसी	**डॉ राधा चौबे** आयोजक सचिव प्राणिविज्ञान विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
महिलाओं के विकृतिविज्ञान पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी और स्लाइड सेशन	26-27 फरवरी, 2015 अलीगढ़	**प्रो महबूब हसन** आचार्य विकृतिविज्ञान विभाग जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज अलीगढ़
सांख्यिकीय मॉडेलिंग और प्रयोगों में नवीन क्षेत्रों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	27-28 फरवरी, 2015 चेन्नई	**डॉ आर रावनन** आयोजन सचिव सांख्यिकी विभाग प्रेसीडेंसी कॉलेज चेन्नई
एंथ्रोपोलॉजिकल परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण विकास, जनस्वास्थ्य और स्वास्थ्य पर राष्ट्रीय सेमिनार	27-28 फरवरी, 2015 दिल्ली	**प्रो अनुप कुमार कपूर** आयोजन सचिव दिल्ली विश्वविद्यालय (नॉर्थ कैम्पस) नई दिल्ली
प्रजनन क्षमता संरक्षणः मौलिक अनुसंधान से चिकित्सीय प्रयोग पर अतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	28 फरवरी, 2015 मनीपाल	**डॉ सतीश कुमार अडिगा** आयोजन सचिव कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल मनीपाल

गोल्डन जुबली CT CME-2015	28 फरवरी, से 1 मार्च 2015 नई दिल्ली	**डॉ साकेत अग्रवाल** आचार्य सी टी वी एस विभाग जी बी पंत अस्पताल नई दिल्ली
तृतीय राजस्थान साइंस कांग्रेस	28 फरवरी, से 2 मार्च, 2015 जयपुर	**प्रो बी. के. शर्मा** आयोजन सचिव मनीपाल यूनिवर्सिटी जयपुर
एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध नवीन औषध खोज और विकासः चुनौतियां और अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	1-2 मार्च, 2015 नई दिल्ली	**डॉ वी. सैमुएल राज** निदेशक एस. आर. एम. यूनिवर्सिटी सोनीपत
मानव विकास हेतु विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पर भारतीय विज्ञान कांग्रेस का 102वां सत्र	1-5 मार्च, 2015 मुम्बई	**डॉ नरेश चन्द्रा** प्रो. वाइस चांसलर मुम्बई विश्वविद्यालय मुम्बई
मधुमेहज बायोमार्कर्स की ताजा खोज और भावी चुनौतियों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	2-3 मार्च, 2015 चेन्नई	**डॉ एस. हेमलता** आचार्य एवं डीन बी. एस. अब्दुर रहमान यूनिवर्सिटी चेन्नई
बोधात्मक व्यवहारात्मक इंटरवेंशंस पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICCBI AIIMS 2015)	2-3 मार्च, 2015 नई दिल्ली	**डॉ मंजू मेहता** आचार्य मनोविकार विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली
भ्रूण प्रत्यारोपण और सगर्भताः इसकी सफलता हेतु नीतियां एवं जटिलताओं पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	9-11 मार्च, 2015 नई दिल्ली	**डॉ सतीश कुमार गुप्ता** डिप्टी डारेक्टर ऐण्ड चीफ डिपार्टमेंट ऑफ रीप्रेडक्टिव सेल नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इम्युनोलॉजी नई दिल्ली
इथनोमेडिसिनल अनुसंधान में अग्रणी पर सेमिनार (FER) 2015	11-13 मार्च, 2015 अमरकंटक	**डॉ वीरेन्द्र के. मिश्रा** सह आचार्य इंदिरा गांधी नेशनल ट्राइबल यूनिवर्सिटी अमरकंटक
एरोमिक्स, आण्विक ऑप्टिकल एवं प्रयोग के साथ नैनो भौतिकी में नवीन विकास पर चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	11-14 मार्च, 2015 दिल्ली	**प्रो मनमोहन** आचार्य एस्ट्रोफिजिक्स भौतिकी एवं यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली नार्थ कैम्पस दिल्ली

अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर गुड क्लीनिकल लेबोरेटरी प्रौक्टिसेज़ (GCLP) कार्यशाला	12-14 मार्च, 2015 चेन्नई	**डॉ सी. एन. श्रीनिवास** आयोजन सचिव वाई आर जी सेंटर फॉर एड्स एजूकेशन चेन्नई
क्लीनिकल पोषण की 19वीं विश्व कांग्रेस-2015 (WCCN-2015)	13-15 मार्च, 2015 वाराणसी	**डॉ रतन के. श्रीवास्तव** आचार्य सामुदायिक चिकित्सा विज्ञान विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
किशोरवय स्वास्थ्य पर 9वां राष्ट्रीय सम्मेलन 2015 (IAAHCON 2015)	13-15 मार्च, 2015 इम्फाल	**डॉ ब्रोगेन सिंह एकोइजम** आचार्य सामुदायिक चिकित्साविज्ञान विभाग रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ इम्फाल
अंतर्राष्ट्रीय हृद् शोध संस्था का 12वां वार्षिक सम्मेलन	14-15 मार्च, 2015 नई दिल्ली	**श्री श्यामल के. गोस्वामी** आचार्य जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी नई दिल्ली
ब्रैकियल प्लेक्सस पर द्वितीय हैण्ड्स-ऑन केडावरिक कार्यशाला	14-15 मार्च, 2015 भुवनेश्वर	**डॉ आशीष पटनायक** ट्रामा एवं आपातकालीन विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान भुवनेश्वर
रेफरैक्ट्री एवं बालकालीन ग्लूकोमा पर संगोष्ठी	14-15 मार्च, 2015 मदुरै	**डॉ मंजू आर. पिल्लै** परामर्शक नेत्र विज्ञान विभाग अरविन्द आई हास्पिटल ऐण्ड पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट आफॅ मदुरै मदुरै
असंचारी रोगों के प्रति जनस्वास्थ्य प्रयासों पर राष्ट्रीय पाठ्यक्रम	16-27 मार्च, 2015 चण्डीगढ़	**डॉ जे. एस. ठाकुर** आचार्य स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़
भारत के पूर्वोत्तर राज्य के वैज्ञानिकों हेतु जीवविज्ञान में आई पी आर पर राष्ट्रीय सम्मेलन	18-20 मार्च, 2015 नोएडा	**डॉ अमित सी चरकवाल** डिप्टी डारेक्टर ऐण्ड हेड एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ माइक्रोबियल बायोटेक्नोलॉजी नोएडा
आपातकालीन पीडियाट्रिक प्रगति और नवीन दिशाओं पर कार्यशाला EMPART-2015	25-29 मार्च, 2015 जयपुर	**डॉ नितिन त्रिवेदी** सह आचार्य पीडियाट्रिक्स विभाग महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज ऐण्ड हॉस्पिटल जयपुर

स्वास्थ्य सुरक्षा उद्योग के व्यावसायिक स्वास्थ्य खतरों पर सेमिनार	25-26 मार्च, 2015 पटियाला	**सुश्री राधा सैनी** सहायक आचार्य सामुदायिक हेल्थनर्स विभाग ग्यान सागर कॉलेज ऑफ फिजियोथिरैपी पटियाला
नैनोटेक्नोलॉजीः आज एवं कल पर सेमिनार	26 मार्च, 2015 भुज	**डॉ प्रागनेश एन दवे** आचार्य एवं प्रमुख रसायन विभाग के. एस. के. वी. कच्छ यूनिवर्सिटी भुज
भारत में मर्त्यता और मृत्य के कारणों पर सूचना पर सेमिनार	26-27 मार्च, 2015 नई दिल्ली	**डॉ नंदिता सैकिया** सह आचार्य जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी नई दिल्ली
रोगवाहकजन्य रोग : भार निगरानी और नियंत्रण पर ब्रेन स्टॉर्मिंग राष्ट्रीय सम्मेलन	26-27 मार्च, 2015 तिरुनलवेली	**डॉ एस. एस. सुधाकर** सहायक आचार्य एवं प्रमुख जैवप्रौद्योगिकी विभाग मनोनमणियम सुनदरनर यूनिवर्सिटी तिरुनलवेली
रसायनचिकित्सा संबधी दोष और पैथटिक पैलिएटिव केयरः रियोटोरिज्म टु क्लीनिक्स काम्पीटेंस पर सेमिनार	27-28 मार्च, 2015 पटियाला	**सुश्री राधा सैनी** सह आचार्य सामुदायिक स्वास्थ्य विभाग ग्यान सागर कॉलेज ऑफ फिजियोथिरैपी पटियाला
वयोवृद्धिः वैश्विक चुनौतियां और अवसर पर सेमिनार	30 मार्च से 3 अप्रैल, 2015 मुम्बई	**डॉ शुभारती घोष** सह आचार्य टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज मुम्बई
जनस्वास्थ्य के मिश्रित विधि अनुसंधान प्रयास पर राष्ट्रीय कार्यशाला	30 मार्च से 3 अप्रैल, 2015 चण्डीगढ़	**डॉ मनमीत कौर** सह आचार्य डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ प्रमोशन स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़

समाचार पत्रों के पंजीकरण नियम 1956 के नियम 8 के अन्तर्गत आई सी एम आर पत्रिका के स्वामित्व तथा अन्य मुद्दों से संबंधित विवरण

प्रकाशन	:	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, अंसारी नगर, नई दिल्ली -110 029
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	श्री जगदीश नारायण माथुर
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, अंसारी नगर, नई दिल्ली -110 029
प्रकाशक का नाम	:	उपर्युक्त
राष्ट्रीयता	:	
पता	:	
सम्पादक का नाम	:	डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, अंसारी नगर, नई दिल्ली -110 029

मैं, जगदीश नारायण माथुर यह घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए तथ्य मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

ह. जे.एन. माथुर
प्रकाशक

तकनीकी सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87